राजेन्द्र केशवलाल शाह

Rajendra Keshavlal Shah

श्री राजेन्द्र केशव लाल शाह, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, से विभूषित कर रही है, गुजराती के महत्त्वपूर्ण कवि हैं और स्वातंत्र्योत्तर युग में गुजराती कविता में नई प्रवृत्ति के पुरोधाओं में से एक हैं।

श्री राजेन्द्र शाह का जन्म 1913 में गुजरात के कैरा ज़िले के कपद्वनाज नामक स्थान में हुआ। जब आप मात्र दो वर्ष के थे, आपके पिता का निधन हो गया। आपकी माँ ने परिवार की कठोर धार्मिक परम्परा में आपका पालन-पोषण किया। मैट्रिक तक की शिक्षा आपने अपने गृह नगर में प्राप्त की, बाद में आपने विल्सन कॉलेज, बम्बई में प्रवेश लिया। आपने एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। अध्यापक, दुकानदार, एक व्यावसायिक फ़र्म के साझीदार और एक मुद्रणालय के मालिक के रूप में—जीवन के विविध अनुभव आपके रहे।

राजेन्द्र शाह की पहली कविता 1933 में विल्सन कॉलेज, बम्बई की पत्रिका *विलसोनियन* में प्रकाशित हुई, लेकिन आपका प्रथम कविता-संकलन *ध्वनि* 1951 में प्रकाशित हुआ, जिसने काफ़ी हलचल पैदा की। अब तक आपके 21 कविता-संकलन प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें *ध्वनि* (1951), *आंदोलन* (1951), *श्रुति* (1957), *मोरपिच्छ* (1959), *शांत कोलाहल* (1962), *चित्रणा* (1967), *क्षण जे चिरंतन* (1968), *विषादने साद* (1969), *मध्यमा* (1978), *उद्गीति* (1979), *ईक्षणा* (1979), *पत्रलेखा* (1981), *प्रसन सप्तक* (1982), *पंच पर्व* (1983), *विभावन* (1983), *द्वासुपर्णा* (1983), *चंदन भीनी अनामिक* (1987), *आरण्यक* (1992), *अंबलाव्या मोर* (1988), *रुमझुम* (1989) काफ़ी चर्चित रहे हैं। आपने जयदेव, विद्यापति, जीवनानंद दास, बुद्धदेव बसु जैसे महत्त्वपूर्ण रचनाकारों की कृतियों का गुजराती अनुवाद किया है।

आपकी कविताएँ समाज के प्रति आपकी प्रतिबद्धता को उजागर करती हैं, लेकिन यह एक कलाकार की प्रतिबद्धता है। आप सौन्दर्य के अन्वेषी और उसके गायक हैं। आपकी कविता में गेयता का गुण प्रमुख रूप से उभर कर आता है। आपका उत्कर्ष—प्रेम, प्रकृति, ईश्वर, मृत्यु, आधुनिक सभ्यता, मिथों, राजनीति और ग्रामजीवन के सहज सौन्दर्य में देखा जा सकता है। भावावेगों की तीव्रता, रूप और अभिव्यक्ति के नव प्रयोग आपको एक महत्त्वपूर्ण कवि के रूप में स्थापित करते हैं। आपकी कविताओं के रहस्यमय स्वर का उत्स नरसिंह मेहता, कबीर, अखो आदि महान मध्यकालीन रचनाकारों की परम्परा में है।

1947 में युवा राजेन्द्र शाह को अपनी कविताओं के लिए 'कुमार चन्द्रक' से सम्मानित किया गया। आपको रणजित राम सुवर्ण चंद्रक

Sri Rajendra Keshavlal Shah, on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today, is an eminent Gujarati poet and one of the pioneers of the new trend in Gujarati poetry in the post-Independence period.

Sri Rejendra Shah was born in 1913, at Kapadvanaj in district Kaira, Gujarat. He lost his father at the tender age of two and his mother brought him up in the strict religious tradition of the family. He studied in his hometown upto matriculation and later joined Wilson College, Bombay. He graudated from M.S. University, Baroda. He has had varied experience as a teacher, grocer, partner in a business firm and owner of a printing press.

Rajendra Shah's first poem was published in 1933, in the *Wilsonian*, the magazine of Wilson College, Bombay, but his first collection of peoms *Dhvani* was published in 1951, which created quite a stir. There are 21 collections of poems to his credit, the important ones being *Dhvani* (1951), *Andolan* (1951), *Shruti* (1957), *Morpinchh* (1959), *Shant Kolahal* (1962), *Chitrana* (1967), *Kshan je Chirantan* (1968), *Vishadne Sad* (1968), *Madhyama* (1978), *Udgiti* (1979), *Ikshana* (1979), *Patralekha* (1981), *Prasana Saptak* (1982), *Panch Parva* (1983), *Vibhavan* (1983), *Dwasuparna* (1983), *Chandan Bhini Anamik* (1987), *Aranyak* (1992), *Amblawya Mor* (1988), *Rum Zum* (1989) etc. He has also translated masters like Jayadeva (*Geet Govinda*), Vidyapati, Jeebanananda Das, Budha Dev Basu etc., into Gujarati.

His poems reveal his commitment to society at large, but it is the commitment of an artist. He is a seeker of beauty and sings of it. He is prominent as a lyrical poet. His excellence lies in his songs on love, nature, God, death, modern civilization, myths, politics, and the simple beauty of rural life. His intensity of emotion and innovation in form and expression set him apart as a poet of great significance. The mystical tone of his poetry stems from the tradition of great medieval masters like Narasimha Mehta, Kabir, Akho etc.

As early as 1947, Sri Rajendra Shah was awarded the 'Kumar Chandrak' for the best contribution (poems) to the *Kumar*. The awards he received include Ranjitram Suvarna Chandrak (1956), Sahitya Akademi Award (1964), Mahakavi Nanalal Prize (1968), Narmnad Chandrak

(1956), साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1964), महाकवि नानालाल पुरस्कार (1968), नर्मद चंद्रक (1977), गुजरात साहित्य परिषद के अरविन्द सुवर्ण चंद्रक (1980) भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार (1985), धानाजी कानाजी सुवर्ण चंद्रक (1986), गुजरात साहित्य अकादेमी के मूर्धन्य साहित्यकार सम्मान (1993) और गुजरात सरकार के नरसिंह मेहता पुरस्कार (1997) से विभूषित किया जा चुका है।

गुजराती कविता के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए साहित्य अकादेमी श्री राजेन्द्र केशव लाल शाह को अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, से विभूषित करती है।

(1977), Aurobindo Suvarna Chandrak by Gujarati Sahitya Parishad (1980), Bharatiya Bhasha Parishad Award (1985), Dhanaji Kanaji Suvarna Chandrak (1986), Murdhanya Sahityakar Samman by Gujarat Sahitya Akademi (1993) and the Narasimha Mehta Award of Government of Gujarat (1994).

For his outstanding contribution to Gujarati poetry, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Sri Rajendra Keshavlal Shah.